“चिलगोजा शंकुओं (Cones) का वैज्ञानिक विधि द्वारा तुड़ान” पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा दिनांक 24 अगस्त, 2018 को ग्राम पंचायत नेसंग, जिला किन्नौर में चिलगोजा प्रजाति के सरंक्षण के लिए राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) द्वारा वित्त पोषित परियोजना “मूरंग वन परिक्षेत्र, जिला किन्नौर, हिमाचल प्रदेश में वैज्ञानिक हस्तक्षेप के माध्यम से चिलगोजा के संरक्षण के लिए जागरूकता” के तहत **“चिलगोजा शंकुओं (Cones) का वैज्ञानिक विधि द्वारा तुड़ान”** पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में ग्राम पंचायत नेसंग के 43 किसानों एवं बागवानों ने भाग लिया।

डॉ. स्वर्ण लता, वैज्ञानिक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने मुख्य अतिथि श्री विजय नेगी, जिला विकास प्रबंधक, किन्नौर (राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक), कुमारी रतन मंजरी नेगी, अध्यक्ष महिला कल्याण परिषद, किन्नौर, श्री अशोक कुमार नेगी, प्रधान ग्राम पंचायत, नेसंग, जिला परिषद सदस्य, श्रीमती शांति देवी, वन अधिकारियों तथा किसानों एवं बागवानों का अभिनन्दन तथा स्वागत किया। अपने स्वागत संबोधन में डॉ. स्वर्ण लता ने कहा कि चिलगोजा जिला किन्नौर का पारिस्थितिक, सामाजिक एवं आर्थिक रूप से एक महत्वपूर्ण वृक्ष है। यह अपनी स्वादिष्ट एवं पोषक गिरी के लिए प्रसिद्ध है तथा विश्व में यह बहुत ही कम स्थानों पर पाया जाता है। यह किन्नौर के लोगों की आय का मुख्य स्त्रोत होने के साथ-साथ उनके आहार एवं रीति-रिवाजों का भी अभिन्न् अंग है। हिमाचल प्रदेश में यह प्रजाति किन्नौर (2,040 हेक्टेयर) तथा चम्बा (20 हेक्टेयर) जिलों में पायी जाती है,परन्तु चिलगोजा

शंकुओं को एकत्रित करने के लिए की जाने वाली शाखाओं की अवैज्ञानिक तरीके से कटाई आज के समय में किन्नौर वन क्षेत्र की बहुत बड़ी समस्या बनी हुई है । इन वृक्षों से चिलगोजा शंकुओं को एकत्रित करने के लिए शाखाओं की अनियंत्रित कटाई से उत्पन्न समस्या से अधिकतर लोग परिचित नहीं हैं जिससे न केवल इसका पुनर्जनन कम हो रहा है अपितु शंकुओं के उत्पादन पर भी विपरीत प्रभाव पड़ रहा है । यदि यह स्थिति यथावत बनी रही तो वह दिन दूर नहीं जब यह वृक्ष इस क्षेत्र से लुप्त हो जाएँगे और लोग इससे होने वाले लाभ से हमेशा के लिए वंचित हो जाएँगे । उन्होंने यह भी बताया की वन कानून के तहत प्राकृतिक वन सरकारी संपत्ति होते हैं परन्तु किन्नौर के लोगों को चिलगोजा बीज एकत्रित करने के अधिकार हैं इसलिए इस तरह की विनाशकारी कटाई से होने वाले नुकसान से बचने के लिए न केवल वैज्ञानिक हस्तक्षेप अपितु लोगों के हस्तक्षेप की भी अत्यधिक आवश्यकता है ताकि इस क्षेत्र में चिलगोजा वृक्षों को हो रही क्षति से बचाया जा सके । इससे न केवल आने वाली भावी पीढ़ियों को इस बहुमूल्य वन सम्पदा का लाभ पहुंचेगा अपितु अन्य पर्यावरणीय सेवाएं भी प्राप्त होती रहेंगी ।

मुख्य अतिथि श्री विजय नेगी, जिला विकास प्रबंधक, किन्नौर (राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक) ने अपने संबोधन में कहा कि बैंक अपनी ओर से अपनी योजनाओं के माध्यम से किसानों तथा बागवानों की सहायता करने के लिए तत्पर रहता है व कहीं न कहीं ग्रामीण विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है । उन्होंने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला को इस महत्वपूर्ण विषय पर जिला किन्नौर के किसानों तथा बागवानों को प्रशिक्षण देने तथा जागरूक करने के लिए धन्यवाद किया । उन्होंने आशा व्यक्त की कि इस प्रशिक्षण से जिला किन्नौर के किसान तथा बागवान लाभान्वित होंगे तथा वैज्ञानिक विधि से चिलगोजा शंकुओं का दोहन करेंगे जिससे यह पौधा तथा इसके जंगल भविष्य में भी विद्यमान रहेंगे । उन्होंने लोगों के आग्रह पर नाबार्ड के विभिन्न योजनाओं के बारे में भी विस्तृत जानकारी दी तथा चिलगोजा के बीजों के व्यापार का सीधा लाभ किसानों एवं बागवानों को मिले इसके लिए उन्हें किसानों से FPOs (Farmer Producer Organization) बनाने का आग्रह किया ।

इस अवसर पर , श्री अशोक कुमार नेगी, प्रधान ग्राम पंचायत, नेसंग, अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि चिलगोजा की पैदावार को बढ़ाने के लिए शाखाओं की अत्यधिक कटाई से चिलगोजा के वृक्षों को हो रही क्षति को रोकना होगा क्योंकि इस क्षेत्र के लोग आर्थिक रूप से चिलगोजा वृक्षों पर अत्यधिक निर्भर हैं । उन्होंने यह भी कहा कि चिलगोजा के जंगलों के सरंक्षण के लिए हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान ने जो चिलगोजा के तुडान पर इतनी दूर आकार चिलगोजा को एकत्रित करने के दोरान हो रही क्षति के बारे में बताया तथा वैकल्पिक उपकरण के प्रयोग की आवश्यकता की जानकारी दी उससे उनके गांव के किसान एवं बागवान ज़रूर जागरूक एवं लाभान्वित होंगे । उन्होंने भविष्य में भी इस तरह के कार्यक्रमों के आयोजन का आग्रह किया ।

तकनीकी सत्र के दौरान चिलगोज़ा संरक्षण से सम्बंधित विभिन्न विषयों पर विस्तार से जानकारी किसानों एवं बागवानों को दी गई । डॉ. स्वर्ण लता, वैज्ञानिक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने किसानों एवं बागवानों को 'चिलगोजा संरक्षण में 'चिलगोजा शंकुओं के सतत् तुड़ान की आवश्यकता' से अवगत करवाया तथा चिलगोजा शंकुओं को एकत्रित करने के लिए की जाने वाली शाखाओं की असंवहनीय तरीके से कटाई से होने वाले नुकसान को रोकने के लिए उचित उपकरण (मल्टी एंगुलर लॉन्ग रीच प्रुनर) के प्रयोग की आवश्यकता पर बल दिया ।

कुमारी रतन मंजरी, अध्यक्ष महिला कल्याण परिषद, किन्नौर ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि चिलगोजा वृक्षों का किन्नौर के लोगों कि आर्थिक विकास एवं रीति रिवाजों में महत्वपूर्ण योगदान है तथा यहाँ के लोग चिलगोजा वृक्षों पर अत्यधिक निर्भर हैं ।

उन्होंने लोगों से चिलगोजा के शंकुओं को एकत्रित करने के दौरान वृक्षों को हो रही क्षति को रोकने के लिए आगे आने को कहा तथा उन्होंने यह भी कहा कि महिलाओं को विशेष तौर पर इसके संरक्षण के लिए आगे आना होगा क्योंकि महिलायें चिलगोजा एवं इससे सम्बंधित रीति रिवाजों से अत्यधिक जुड़ीं हुई हैं । उन्होंने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला तथा राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक को इस महत्वपूर्ण विषय पर जिला किन्नौर के किसानों एवं बागवानों को प्रशिक्षण देने तथा जागरूक करने के लिए धन्यवाद किया ।

श्री लाल सिंह नेगी, वन परिक्षेत्र अधिकारी ने 'चिलगोजा वन क्षेत्र की समस्याओं तथा उनके समाधान' के बारे में लोगों को जागरूक किया । इसी दौरान लोगों ने चिलगोजा से सम्बंधित अपनी समस्याएं वन अधिकारी के समक्ष रखी एवं वन अधिकारी ने भी उन्हें पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया ।

श्री जवाला प्रसाद, तकनीकी अधिकारी ने "चिलगोजा के पोधरोपण" के बारे में लोगो को जानकारी दी तथा चिलगोजा के पैदावार को बढ़ाने के लिए वृक्षारोपण हेतु अच्छी गुणवता के पौधों के चयन के आवश्यकता के बारे बताया। उन्होंने यह भी कहा यदि वनों में अच्छी गुणवता वाले वृक्ष दिखें तो उसकी जानकारी वे वन विभाग के अधिकारियों को आवश्य दें ताकि वे उसी गुणवता वाले पोधों की नर्सरी तैयार कर सकें । इससे वन विभाग इन पौधों को वनों में वृक्षरोपित कर अच्छी गुणवत्ता वाले चिलगोजा वन तैयार कर सकें जिससे न केवल चिलगोजा के बीजों की पैदावार बढ़ेगी अपितु किसानो को बीजों के व्यापार में भी अधिक मुनाफा होगा ।

कुमारी वर्षा परियोजना सहायक हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने 'मल्टी एंगुलर लॉन्ग रीच प्रुनर के संचालन तथा इसकी सहायता से चिलगोजा शंकुओं को कैसे तोड़ा जाये' के बारे में लोगों को साथ के चिलगोजा वन क्षेत्र में ले जाकर इस तकनीक का प्रदर्शन किया । इसी दौरान चार मल्टी एंगुलर लॉन्ग रीच प्रुनर भी पंचायत प्रधान को मुख्य अतिथि द्वारा प्रदान की गई ।

अंत में डॉ. स्वर्ण लता, वैज्ञानिक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थित मुख्य अतिथि श्री विजय नेगी जिला विकास प्रबंधक (राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक) किन्नौर, कुमारी रतन मंजरी, अध्यक्ष महिला कल्याण परिषद, किन्नौर, श्री अशोक कुमार नेगी, प्रधान ग्राम पंचायत, नेसंग, जिला परिषद सदस्य, श्रीमती शांति देवी, पंचायत सदस्यों, वन अधिकारियों तथा किसानों एवं बागवानों का धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया । उन्होंने चिलगोजा परियोजना में प्रस्तावित जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन हेतु सभी आवश्यक सुविधायें प्रदान करने के लिए निदेशक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला एवं वित्तीय सहायता के लिए राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड), शिमला, हिमाचल प्रदेश का भी धन्यवाद किया ।

NABARD
चिलगोजा के शंकुओं (Cones) का वैज्ञानिक विधि द्वारा तुड़ान
पर
एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम
24 अगस्त, 2018
ग्राम पंचायत नेसंग, जिला किन्नौर, हिमाचल प्रदेश
आयोजक: हिमालयन वन अनुसंधान संसथान,
सौजन्य: राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक, शिमला

मीडिया कवरेज

किन्नौर के चिलगोजे का वजूद खतरे में

मूरंग-नेसंग में कार्यशाला के दौरान विशेषज्ञों ने संरक्षण पर दिया जोर, 100 किसान-बागबानों ने लिया भाग

■ स्टाफ रिपोर्टर, शिमला

अपनी विशिष्टता के लिए जाना जाने वाला चिलगोजा का अस्तित्व खतरे में है। चिलगोजा कबाइली जिला किन्नौर में पाया जाता है। किन्नौर के मूरंग एवं नेसंग में आयोजित कार्यशाला में विशेषज्ञों ने इसके संरक्षण पर जोर दिया। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला ग्राम पंचायत मूरंग एवं ग्राम पंचायत नेसंग, किन्नौर में चिलगोजा प्रजाति के सरंक्षण पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें इनके वैज्ञानिक विधि द्वारा तुड़ान की जानकारी दी गई। इसमें दोनों पंचायतों के करीब 100 किसानों तथा बागबानों ने भाग लिया। इस कार्यशाला के दौरान हिमालयन वन अनुसंधान की वैज्ञानिक डा. स्वर्ण लता ने कहा कि चिलगोजा जिला किन्नौर का परिस्थितिकी और सामाजिक एवं आर्थिक रूप से एक महत्त्वपूर्ण वृक्ष है। यह किन्नौर के लोगों की आय का मुख्य स्रोत होने के साथ-साथ उनके आहार एवं रीति-रिवाजों का भी अभिन्न अंग है, लेकिन चिलगोजा शंकुओं को एकत्रित करने के लिए की जाने वाली शाखाओं की अवैज्ञानिक तरीके से कटाई आज के समय में किन्नौर वन क्षेत्र की बहुत बड़ी समस्या बनी हुई है। इन वृक्षों से चिलगोजा शंकुओं को एकत्रित करने के लिए शाखाओं की अनियंत्रित कटाई से न केवल इसका पुर्नजन्म कम हो रहा है, बल्कि शंकुओं के उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। अनियंत्रित कटाई से उत्पन्न समस्या के दूरगामी परिणामों से अधिकतर लोग परिचित नही हैं, यदि यह स्थिति यथावत बनी रही तो वह दिन दूर नहीं जब यह वृक्ष इस क्षेत्र से लुप्त हो जाएंगे और लोग इससे होने वाले लाभ से हमेशा के लिए वंचित हो जाएंगे। इसके आलावा उन्होंने चिलगोजा शंकुओं को एकत्रित करने के लिए की जाने वाली शाखाओं की असंवहनीय तरीके से कटाई से होने वाले नुकसान को रोकने के लिए उचित उपकरण के प्रयोग की आवश्यकता पर बल दिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राष्ट्रीय कृषि विकास बैंक के जिला विकास प्रबंधक विजय नेगी ने कहा कि बैंक अपनी ओर से अपनी योजनाओं के माध्यम से किसानों तथा बागबानों की सहायता करने के लिए तत्पर है। बैंक ग्रामीण विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि इस प्रशिक्षण से जिला किन्नौर के किसान तथा बागबान लाभान्वित होंगे तथा वैज्ञानिक विधि से चिलगोजा प्रजाति का दोहन करेंगे जिससे यह पौधा तथा इसके जंगल भविष्य में भी विद्यमान रहें। उन्होंने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला की इस पहल की सराहना की और यह भी कहा कि भविष्य में भी बैंक इस तरह के प्रयास करता रहेगा। इस अवसर पर अपने विचार प्रकट करते हुए सामाजिक कार्यकर्ता, कुमारी रतन मंजरी नेगी ने कहा कि यह किन्नौर में रहने वाले हर एक नागरिक की जिम्मेदारी है कि वह चिलगोजा जैसे अनमोल प्राकृतिक संसाधन के संरक्षण के लिए स्वेच्छा से आगे आकर अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें।

अवैज्ञानिक तरीके से कटाई से चिलगोजा को खतरा

शिमला | हिमालयन फॉरेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट (एचएफआरआई) ने किन्नौर में चिलगोजा के पेड़ों की पुनः उत्पति कम होने पर गहन चिंता जताई है। वैज्ञानिकों ने अवैज्ञानिक तरीके से कटाई करने से चिलगोजा को खतरा बताया और मल्टी एंगुलर लॉन्ग रीच प्रूनर के प्रयोग की सलाह दी है। डॉ. स्वर्ण लता ने कहा कि किसानों को जागरूक करते हुए कहा कि चिलगोजा इकट्ठा करने के लिए शाखाओं की अवैज्ञानिक कटाई से चिलगोजा के पेड़ों का पैदा होना कम हो रहा है। इससे न केवल हर वर्ष उत्पादन पर असर पड़ रहा है, बल्कि पेड़ भी खत्म हो रहे हैं। चिलगोजा यहां के लोगों की आय का मुख्य साधन है, ऐसे में इसके पेड़ों को बचाने के लिए किसानों को ठोस पहल की जरूरत है।

चिलगोजा संरक्षण बारे किया जागरूक

शिमला, 24 अगस्त (ब्यूरो): किन्नौर जिला में चिलगोजा का कटान नहीं रोका गया तो यह प्रजाति विलुप्त हो जाएगी और लोग इससे होने वाले लाभ से हमेशा के लिए वंचित हो जाएंगे। यह जानकारी हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला द्वारा किन्नौर की ग्राम पंचायत मूरंग और नेसंग में आयोजित प्रशिक्षण शिविर के दौरान किसानों-बागवानों को दी गई।

****